कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, मार्च 2024 | वर्ष 2, अंक 7, पृष्ठ 4





राम लाल आनंद महाविद्यालय के स्थापना दिवस में प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, गवर्निंग बॉडी के चेयरमैन संतोष तनेजा, वरिष्ठ पत्रकार राहुल देव, विनीत कुमार, सोनिया गुरनानी व दीपक मलिक (दाएं से बाएं)

विद्यार्थियों को जीवन जीने की कला भी सिखाई जाए: राहुल देव

कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। असली शिक्षा तो आचरण से होती है। केवल बोलकर तो नहीं होती। विषय को रोचक बना देना ही शिक्षक का सर्वश्रेष्ठ गुण होता है। गुरु अपना विज्ञापन खुद नहीं करता। हमें इस भाव से बचना चाहिए। अच्छा शिक्षक कौन हो सकता है, जो आजीवन विद्यार्थी बना रहता है। आजीवन सीखने के क्रम में रहता है। यह बात राम लाल आनंद महाविद्यालय के 60वें स्थापना दिवस समारोह में 22 फरवरी को वरिष्ठ पत्रकार राहुल देव ने कही।

महाविद्यालय के एम्फीथिएटर में आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर राहुल देव ने कोटा की घटनाओं के संदर्भ में कहा कि विद्यार्थियों को जीवन का विज्ञान नहीं सिखाया जा रहा। जरूरत इस बात की है कि उन्हें आंतरिक रूप से जीवन जीने की कला भी सिखाई जाए।

अगर ऐसा नहीं होगा तो विद्यार्थी पिछड़ जाएंगे। उन्होंने कहा कि प्रकृति ने हमें बहुभाषी बनाया है। इसको लेकर अपने को कमतर न समझें। देश के सर्वांगीण विकास के लिए अपनी भाषा में उच्चतम ज्ञान पाने का अधिकार मिले, यह लक्ष्य होना चाहिए। महज कुछ अंक हासिल करने के लिए आपका जन्म नहीं हुआ है। अंततः आप जो बनेंगे वह अपने सपने, मेहनत और कार्यों से बनेंगे।

• महाविद्यालय को राम लाल आनंद के परिजनों ने 12 लाख रुपए दान में दिए
• इस राशि से हर साल 8 स्कॉलरशिप और एक अवार्ड दिया जाएगा

महाविद्यालय की गवर्निंग बॉडी के चेयरमैन संतोष तनेजा ने कहा कि कॅरियर के उद्देश्य की जगह जीवन का उद्देश्य अधिक महत्वपूर्ण होता है। विद्यार्थी इस बात को सोचें।

उन्होंने जीवन में छोटे काम से शुरुआत कर बड़ा लक्ष्य हासिल करने वाले लोगों का उदाहरण देते हुए अपनी बात रखी।

राम लाल आनंद के प्रपौत्र दीपक मलिक ने राम लाल आनंद के जीवन के अंतिम दिनों को याद करते हुए बताया कि उन्हें हिंदी भाषा से किस तरह प्रेम था। उन्होंने महाविद्यालय की स्थापना में उनके योगदान को भी बताया। वक्ता विनीत कुमार गुप्ता ने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वह शिक्षा हासिल कर विदेशों का रुख न करें। अपने देश में काम करें। कोई व्यक्ति किसी क्षेत्र में अग्रणी तभी बनता है जब वह ईमानदारी से काम करता है।

फैशन डिजाइनर सोनिया गुरनानी का कहना था कि देश की बैकबोन बच्चे हैं और वे देश का भविष्य भी हैं। आप समय का सही उपयोग करेंगे तो समय भी आपको सही समय पर काम आएगा, इस बात का ध्यान रखिए।

इससे पहले प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने महाविद्यालय की 1964 में किस तरह स्थापना हुई और उसकी यात्रा यहां तक कैसे तय हुई, इस पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि राम लाल आनंद जी की तीसरी पीढ़ी ने उनके काम को विस्तार देने का फैसला किया है। इसी कड़ी में उन्होंने महाविद्यालय को 12 लाख रुपए दान किए हैं, जिससे आठ स्कॉलरशिप और एक अवार्ड हर साल दिया जाएगा।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, उपप्राचार्य प्रो. सुभाष चंद्र डबास, प्रो. सीमा गुप्ता, प्रो. प्रेरणा दीवान एवं प्रो. मुक्ता दत्ता मजूमदार ने अतिथियों को शॉल और किताब भेंटकर स्वागत किया। दस्तूर सोसा. इटी ने सरस्वती वंदना और दिल्ली विश्वविद्यालय का कुलगीत प्रस्तुत किया तो संचालन की जिम्मेदारी खुशी वशिष्ठ और रौनक सिंह ने निभाई। धन्यवाद ज्ञापन रितु ने दिया।

माइलस्टोन में विद्यार्थियों को रोजगार के अवसर मिले

कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय में 29 फरवरी और 1 मार्च को पाथवे समिति ने दो दिवसीय प्लेसमेंट और इंटर्नशिप हाइब्रिड फेयर माइलस्टोन 4.0 का आयोजन किया, जो प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, समिति संयो. जिका प्रो. नीना मित्तल के मार्गदर्शन में हुआ। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को नौकरी और इंटर्नशिप के अवसरों का पता लगाने के लिए एक मंच प्रदान करना था। इसमें विद्यार्थी जिस तरह से उद्योग जगत के विशेषज्ञों के साथ संवाद करते हैं उसी तरह से नौकरी के बाजार में मौजूदा दृष्टिकोण के बारे में पता चलता है। इस अवसर ने विद्यार्थियों को अपने कौशल प्रदर्शित करने और संभावित नियोक्ताओं के साथ संवाद करने की अनुमति दी।

स्वच्छता के प्रति लोगों को किया गया जागरूक

नई दिल्ली। राम लाल आनंद कॉलेज में 5 फरवरी 2024 को हिंदी विभाग की ओर से परिसर की साफ–सफाई की गई। इस आयोजन में हिंदी विभाग के विद्यार्थियों एवं हिंदी साहित्य परिषद् की संयोजिका और हिन्दी विभाग की प्रो. श्रुति आनंद ने भाग लिया। शिक्षकों के निर्देशन में विद्यार्थियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया। इसी के साथ परिसर में कई जगह पड़ी सामग्री को साफ किया गया।

लोकतांत्रिक प्रक्रिया में चुनाव के महत्व पर प्रकाश डाला

खुशी वशिष्ठ

नई दिल्ली। सेरेनिटी सोसाइटी (बीए प्रोग्राम) ने 8 फरवरी को महाविद्यालय के सेमिनार हॉल में वक्ता सत्र का आयोजन किया। यह सत्र चुनाव और उनके महत्व पर था। आयोजन की शुरुआत में सेरेनिटी सोसाइटी की संयोजिका डॉ. सुनैना शर्मा ने मुख्य अतिथि सुधांशु कौशिक का स्वागत किया। सुधांशु कौशिक ने चुनावों की गतिशीलता और महत्व पर विस्तार से बातचीत की।

उन्होंने लोकतांत्रिक प्रक्रिया को आकार देने में चुनावों की भूमिका पर प्रकाश डाला। लोगों की भागीदारी की जिम्मेदारी पर जोर दिया। उनके वक्तव्य में मतदाता जागरूकता, चुनाव सुधार और शासन पर चुनाव के प्रभाव सहित विभिन्न पहलू शामिल थे। संबोधन के बाद विद्यार्थियों ने वक्ता के साथ बातचीत की।

सीवी में क्या लिखें और क्या न लिखें, यह जानना जरूरी

अनुराग

नई दिल्ली। सीवी बनाते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए और कौन सी गलतियां नहीं करनी चाहिए। इस संबंध में मुख्य अतिथि राघव मुतनेजा ने पाथवे कॅरिअर काउंसिलिंग एवं प्लेसमेंट सेल की ओर से आयोजित सीवी निर्माण कार्यशाला में विस्तार से प्रकाश डाला।

राम लाल आनंद महाविद्यालय के एम्फी थियेटर में आयोजित कार्यशाला में राघव मुतनेजा ने अपने बनाये कुछ सीवी भी विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत किए। उन्होंने बताया कि सीवी में क्या लिखना चाहिए, क्या नहीं लिखना चाहिए, क्या है जो आपके सीवी को अधिक आकर्षक बनाता है, क्या है जो आपके सीवी का आकर्षण कम करता है। ऐसी अनेक बारीकियों पर बात की। इसी के साथ उन्होंने बताया कि ईमेल आईडी कैसी होनी चाहिए, एड्रेस कितना लिखना है, क्वालीफिकेशन और स्किल्स हॉबी कितनी और कैसे लिखनी है के विषय में अच्छे से जानकारी दी।

मीडिया प्रोडक्शन के अलग–अलग सॉफ्टवेयर सीखेंगे विद्यार्थी

श्रुति मिश्रा

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय में मीडिया में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए मीडिया प्रोडक्शन के तहत 'एडिटिंग सॉफ्टवेयर सर्टिफिकेट कोर्स' शुरू किया गया है। इसका शुभारंभ 3 फरवरी 2024 को किया गया। यह सर्टिफिकेट कोर्स गूगल मीट प्लेटफार्म पर ऑनलाइन कराया जा रहा है। इसकी अवधि 3 फरवरी से लेकर 24 मार्च 2024 तक रहेगी। इसका आयोजन महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की ओर से किया जा रहा है। पहले दिन कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के बाद विधिवत कोर्स की शुरुआत हुई।

उद्घाटन सत्र में विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए विभाग की पूरी यात्रा के बारे में बताया। यह कोर्स शुरू करने का उद्देश्य बताते हुए उन्होंने कहा कि इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को मीडिया में प्रयोग होने वाले सॉफ्टवेयर्स की जानकारी देना है, जिससे विद्यार्थी इन सॉफ्टवेयर को इस्तेमाल करना अच्छे से सीख पाएं। प्रो. राकेश कुमार ने बताया कि कुछ समय पहले भी विभाग इस तरह का कोर्स करा चुका है, जिसके बेहतर परिणाम सामने आए थे, उसी को देखकर यह कोर्स पुनः कराया जा रहा है। उन्होंने विभाग की ओर से किए जाने वाले कार्यों में प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता के सहयोग और मार्गदर्शन का भी जिक्र किया।

कोर्स के सह समन्वयक डॉ. प्रदीप कुमार ने कहा कि इसमें विशेषज्ञ अलग अलग मीडिया प्रोडक्शन के सॉफ्टवेयर सिखाएंगे। इस कोर्स के दौरान एडोब इनडिजाइन, क्वार्क एक्सप्रेस, कोरल ड्रा, एडोब ऑडिशन, एडोब प्रीमियर प्रो, एडोब आफ्टर इफेक्ट्स, एडोब इलस्ट्रेटर, वर्डप्रेस, ब्लॉगर आदि सॉफ्टवेयर विद्यार्थियों को सिखाए जाएंगे। उद्घाटन सत्र के दौरान विभाग के शिक्षक डॉ. अटल तिवारी, सीमा झा, डॉ. निशा सिंह, श्वेता आर्या सहित बड़ी संख्या में प्रतिभागी मौजूद रहे।



क्वार्क पर काम करना दिलचस्प अनेक पहलुओं से परिचित हुआ

सबसे पहले उन सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों को शुक्रिया कहना चाहता हूं, जिनका इस 'कैम्पस कनेक्ट' के मार्च अंक में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग रहा है। कोई भी कार्य हमें तब बोझ लगता है जब हम उसको बोझ समझने लगते हैं। यदि हम उस काम को मनोरंजक बनाकर करें तो मुझे लगता है कि काम बहुत आसान है। यही कुछ 'कैम्पस कनेक्ट' का संपादन करते हुए हमें महसूस हुआ। काम करते हुए कई समस्याएं भी आईं। दरअसल कि ठनाइयां ही सफलता का मूलमंत्र हैं।



पुष्पेन्द्र अहिरवार

खैर, जब मैंने अपना काम पूरा कर लिया तो अच्छा लगा। मुझे इस अंक में दोहरी मेहनत करनी पड़ी। मुझे अपना काम करते हुए सेव करते रहना चाहिए था। अनजाने में अथवा न पूछने के कारण लगभग काम पूरा होने के बाद पूरा अखबार डिलीट हो गया। इससे हम परेशान तो हुए, पर हार नहीं मानी।

दृढ़ संकल्प हो तो कोई काम कठिन नहीं होता है, ऐसा हम सुनते आए हैं। ईन्यूज लेटर 'कैम्पस कनेक्ट' पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए सुनहरा अवसर है। अपना काम निखारने के लिए। प्रिंट माध्यम में काम करने के लिए सीखने के लिए। सबसे बड़ी बात पत्रकारिता के क्षेत्र में समय का ध्यान रखना है। सारा का सारा खेल समय का है। खासकर पत्रकारिता के मामले में। यह काम करते हुए रिपोर्टिंग, सम्पादन और क्वॉर्क एक्सप्रेस में बहुत से आयाम सीखने को मिले। आज बेहद खुश हूं। और पुनः शिक्षकों और विद्यार्थियों का धन्यवाद करता हूं।

लेखिका नासिरा शर्मा को शरतचंद्र सम्मान

संजीव राज

नई दिल्ली। नासिरा शर्मा हिंदी की जानी मानी लेखिका हैं। स्वतंत्र पत्रकारिता के साथ ही सृजनात्मक लेखन में उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया है। साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित नासिरा शर्मा ईरानी समाज और राजनीति के अतिरिक्त कला व सांस्कृतिक विषयों की विशेषज्ञ हैं। नासिरा शर्मा ने अपने लेखन कार्य की शुरुआत कहानियों से की थी।

नासिरा शर्मा का प्रथम कहानी संग्रह वर्ष 1986 में 'पत्थर गली' नाम से प्रकाशित हुआ था। इनकी कहानियों में जीवन का सजीव चित्रण देखने को मिलता है, जिससे पाठक वर्ग अपने आप को जुड़ा महसूस करते है। इनकी प्रमुख कृतियां पत्थर गली, खुदा की वापसी, दूसरा ताजमहल, पारिजात, कुइयां जान, राष्ट्र और मुसलमान आदि हैं। 2008 में उपन्यास कुइयां जान के लिए उन्हें यूके कथा सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है। सन् 2014 में डॉ. राही मासूम रजा साहित्य सम्मान से अलंकृत किया गया।



लेखिका नासिरा शर्मा को उपन्यास पारिजात के लिए 2016 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत उपन्यास पारिजात केवल एक वृक्ष, कथा और विश्वास मात्र नहीं है बल्कि यथार्थ की धरती पर लिखी एक ऐसी तमन्ना है, जो रोहन के खून में रेशा–रेशा बनकर उतरी है और रूही के श्वासों में ख्वाब बनकर घुल गई है। उपन्यास में 'पारिजात' एक रूपक नहीं, वह दरअसल नए–पुराने रिश्तों की दास्तान है। नासिरा शर्मा को वर्ष 2019 का व्यास सम्मान उनके उपन्यास कागज की नाव के लिए प्रदान किया गया।

नासिरा शर्मा की आरंभिक शिक्षा घर से ही हुई। फिर वह उच्च शिक्षा के लिए दिल्ली आ गईं। यहां उन्होंने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से फारसी भाषा में एम.ए की डिग्री हासिल की। उच्च शिक्षा पूरी करने के बाद नासिरा शर्मा ने दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया में फारसी भाषा का अध्यापन कार्य किया। कुछ समय तक एक निजी रेडियो स्टेशन पर प्रोग्राम ऑफिसर के रूप में काम किया। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन साहित्य सृजन में लगा दिया। हिंदी साहित्य में इनके इस योगदान को देखते हुए हाल ही में इन्हें शरत चंद्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार श्री रास बिहारी मिशन की ओर से दिया गया। यह समारोह श्री रास बिहारी मिशन भागलपुर ने 16 फरवरी को गांधी शांति प्रतिष्ठान में आयोजित किया था। सम्मान समारोह की अध्यक्षता गांधीवादी लेखक कुमार प्रशांत ने की थी। पुरस्कार मिलने के बाद उन्होंने शरत चन्द्र जैसे लेखकों से नाम जुड़ने पर आभार प्रकट किया।

श्री रास बिहारी मिशन की कर्ताधर्ता गांधीवादी लेखिका सुजाता हैं। उन्होंने सम्मान समारोह के दौरान बताया कि नासिरा जी से पहले भी यह सम्मान कई लेखकों को दिया जा चुका है। संस्था की कोशिश रहती है कि हर साल देश के अलग–अलग शहरों में यह सम्मान समारोह आयोजित किया जाए। इसी को ध्यान में रखकर इस साल दिल्ली में यह आयोजन किया गया।

सैनिक के लिए सर्वप्रथम राष्ट्र है : मेजर योगेंद्र

सर नमस्कार, आपका हमारे सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम में स्वागत है।

नमस्कार। जय हिंद। रामलाल आनंद कॉलेज दिल्ली यूनिवर्सिटी के तमाम छात्र–छात्राओं को मैं रेडियो तरंग के जरिए शुभकामनाएं देता हूं। मैं अपने आप को बड़ा सौभाग्यशाली समझ रहा हूं कि देश की युवा शक्ति के साथ आज मैं उनके पास हूं।

जब आप सेना में भर्ती हुए तब आपकी उम्र 16 साल 5 महीने थी। इतनी कम उम्र में बाकी बच्चे यह तय नहीं कर पाते कि क्या करना है। इतनी कम उम्र में देश के प्रति समर्पित होंने के पीछे क्या वजह थी?

जैसा हम जानते हैं कि जो हम देखते हैं, जो सुनते हैं वह हमारे दिल और दिमाग के ऊपर एक छाप छोड़ देता है। पिता फौजी थे। उन्होंने कई युद्धों के बारे में बताया था। फिर स्कूल के अंदर किताबों में पढ़ा था कि हिंदुस्तान का अकेला सैनिक 8 पैटर्न टैंकों को ध्वस्त कर देता है। नौवें पर निशाना लगाते लगाते मां भारती की गोद में सो जाता है। वीर अब्दुल हमीद की कहानी को पढ़ा था। तभी एक मन मस्तिष्क में बीज रोपित हुआ। ऐसी स्थिति जहां पर खाना नहीं मिलता, पानी नहीं मिलता, सोने को नहीं मिलता, लोगों के शव तक पड़े होते हैं, फिर भी एक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बढ़ना होता है। उन परिस्थितियों को देखना चाहता था। तभी जीवन का एक लक्ष्य बना। एक भाव बना, जो हम सपनों को देखते हैं, लेकिन जीते नहीं है। जब हम अचेतन मस्तिष्क में अपने उस भाव को जीना शुरू करते हैं। तो जब जिया जाता है तो आत्मा से जिया जाता है। आत्मा तो इस अल्लाह, वाहेगुरु, परमात्मा का अंश होती है। जब आपके सपनों में भगवान शामिल हो गया तो सपने को साकार होने से दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती। तभी तो 11वीं पास करते ही ट्वेल्थ में आया था और 16 साल 5 महीने की अवस्था में फौज में भर्ती हुआ, यही कारण था।

1996 में आप सेना में भर्ती हुए। 5 मई 1999 को आपकी शादी हुई। इसके कुछ ही समय बाद आपको जंग में जाना पड़ा। परिवार और जिम्मेदारी के बीच आपने कैसे संतुलन बनाया?

देखिए, जब वर्दी पहन ली तो सबसे पहले जिम्मेदारी देश की रक्षा और सुरक्षा की है। शादी हुई, लेकिन पहली रात को ही आभास हो गया कि कुछ तो हो गया है। एक ऐसा दृश्य मुझे दिखाई दिया कि हमारे तिरंगे को लेकर कई लोग भाग रहे हैं। हमारे सैनिक पीछे चल रहे हैं। उनको गोलियां लग रही हैं, लेकिन वह तिरंगे को नहीं छोड़ रहे। यह बात अपने घर वालों को बताई तो मां ने कहा उस माहौल में रहते हो तो वह माहौल ही आपको दिखाई दिया होगा। लेकिन मैं अंदर से बेचैन था। कुछ तो हुआ है। देश की रक्षा पहली जिम्मेदारी है और उस जिम्मेदारी को निभाने के लिए मैं 19 मई को निकल गया था। वह आभासीय दृश्य दिखाई दिया, उसकी सत्यता 20 तारीख को जम्मू ट्रांजिट कैंप में पहुंचने पर पता चली कि कारगिल युद्ध शुरू हो गया।

इस युद्ध में आपकी क्या भूमिका रही और वह पांच रुपयों के सिक्कों ने आपका साथ दिया साहस जुटाने में। देश को बचाने में तो वह कहानी क्या रही है, हम आपसे जानना चाहते हैं।

पांच रुपए के सिक्के नहीं शायद वह भारत मां की ऐसी शक्ति थे, जिसकी बदौलत आज मैं आपके सामने बैठा हूं। व्यक्ति की पहचान किसी और रंग से नहीं बनती है। व्यक्ति की पहचान उसके काम से होती है। मैं कोई विशेष शक्ति लेकर तो धरती पर पैदा नहीं हुआ। आप लोगों की तरह एक मां की गर्भ से पैदा हुआ। किसान और जवान का बेटा हूं। लड़ाई जब शुरू हुई तो पहले दोनों लिंक टॉप के ऊपर हमने 22 दिन तक युद्ध लड़ा था। उस 22 दिन के दौरान हमने अपने दो ऑफिसर, दो जूनियर कमीशन ऑफिसर और 21 जवानों को खोया। तब जाकर हिंदुस्तान की सेना को पहली सफलता के रूप में वह दोनों लिंक टॉप मिले। 15 सैनिकों का काम फॉरवर्ड में लड़ रहे जवानों को राशन पहुंचाना था। जवान सुबह साढ़े पांच बजे सामान को लेकर चलते थे और रात को ढाई बजे ऊपर पहुंचते थे। दो घंटे में नीचे आते थे। उसी काम से हमारी तीनों जवानों की पहचान बनी। तीनों सैनिकों का फिजिकल और मेंटल बहुत स्ट्रॉन्ग था। इनको कमांडो टीम के अंदर शामिल किया जाए। वह कमांडो टीम, जो हमें तीनों को दूसरा टारगेट मिला टाइगर हिल, उसको फतह करने का। इसकी ऊंचाई लगभग 16500 फीट थी। वहां ऑक्सीजन की कमी थी। दुश्मन इतनी भारी तादाद में बैठे थे। उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि हम यहां से वापस जाएंगे, लेकिन वे भूल गए। यह हिंदुस्तान की मिट्टी है और इस मिट्टी में तो शेर पैदा होते हैं। जून का महीना मध्य भारत की गर्मी से तप रहा है, तब चेहरे से खून टपकता हुआ हिंदुस्तान के सैनिक कंधे से कंधा और कदम से कदम मिलाकर टाइगर हिल टॉप पर चढ़े।

आपको सबसे कम उम्र में परमवीर चक्र सम्मान मिला। जब आपको यह सम्मान मिला तो उस समय आप क्या महसूस किए?

उस समय अलग खुशी थी। उसको शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है। सैनिक जब युद्ध क्षेत्र में होता है या कहीं पर भी एक युद्ध लड़ता है। चाहे वह दुश्मनों के साथ लड़ता हो। चाहे आपदा प्रबंधन में काम करता हो। देश और दुनिया में जो आपदा प्रबंधन आते हैं, इसमें बड़े पैमाने पर बाढ़ आ जाती है। भूकंप आ जाता है। ऐसे में जब एक सैनिक युद्ध क्षेत्र में पहुंचा तो उसने कभी किसी फल की इच्छा नहीं की। बस उसने सिर्फ यह देखा है कि मुझे जो काम मिला है वह मुझे हर हाल में पूर्ण करना है। उस काम का जो फल उसको मिलता है। उसमें उसे अनोखी खुशी होती है। कभी जीवन में सोचा भी नहीं था। बस इतना सोचा था कि युद्ध लड़ना है और दुश्मनों को मारना है। हम पढ़ते थे कि परमवीर चक्र मेजर होशियार सिंह को मिला है। ट्रेनिंग के दौरान देखा था। पहले तो सोचते थे वह बंदा कैसा होता होगा। उसे देखने का सौभाग्य मिला था, लेकिन यह पता नहीं था कि यह अवार्ड कभी मुझे भी मिलने वाला है।

आज देश में जो नौजवान साथी सेना में भर्ती होना चाहते हैं उन्हें क्या करना चाहिए। वे किस प्रकार सेना में भर्ती हो सकते हैं, इसके बारे में भी बताइएगा।

बिल्कुल, देखिए सेना में भर्ती होने के कई मौके हैं। अभी जैसे अग्निवीर योजना चल रही है। उसकी तो उम्र अभी 17 साल से शुरू होती है। फिर उसके बाद 12वीं में पढ़ रहे हैं तो एनडीए के माध्यम से सेना के अंदर ज्वाइन कर सकते हैं। अगर एनडीए में भी नहीं हुआ तो आप स्नातक करने के बाद सीडीएस के माध्यम से भी सेना में जा सकते है। जो खास करके एनसीसी स्टूडेंट हैं, जिनके पास सी सर्टिफिकेट है उनको तो रिटन टेस्ट देने की भी आवश्यकता नहीं होती। डायरेक्ट एंट्री उनकी होती है। एक बात ध्यान रखिए कि वर्दी पहनना ही सैनिक नहीं है। जो हमारे मन के अंदर है, वह भाव होने चाहिए कि हमें कहीं पर भी रहकर निस्वार्थ भाव से ईमानदारी के साथ राष्ट्र को ऊपर उठाना है। राष्ट्र सर्वप्रथम हमारा है। देश के महान स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु ने कौन सी वर्दी पहनी थी, लेकिन उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि था और इसीलिए वह युवा अवस्था में अपनी जवानी को इस राष्ट्र के ऊपर कुर्बान कर गए। वह भी तो एक सैनिक थे। सैनिक वर्दी से नहीं मन से होता है। इसका सबसे बेहतरीन उदाहरण यह स्वतंत्रता सेनानी हैं। ऐसे ही अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। देश के अलग–अलग हिस्सों में भी ऐसे तमाम युवाओं ने अपनी जिंदगी देश के नाम पर कुर्बान कर दी।

आपकी उस समय क्या मनःस्थिति थी, जब आपने अपने ही साथियों को शहीद होते देखा?

जो हमें एक ट्रेनिंग मिलती है वह जीवन का ऐसा पार्ट होता है जो हमारे जीवन में एक अनुशासन लेकर आता है। जो एक त्याग की भावना से भर देता है। वह ट्रेनिंग हमें एक नई दिशा देती है और अनुशासित जीवन को जीने के लिए बाध्य करती है। जब हम अनुशासित होकर जीवन को जीते हैं तो बहुत सारी फ्रीडम खत्म हो जाती है। तो वहां जब मैं देख रहा था कि एक–एक साथी अपने कर्तव्य पथ के ऊपर भारत मां के आंचल को साफ करते हुए अपने लहू की हर बूंद को बढ़ाते हुए खुशी–खुशी अपने प्राणों को त्याग रहे हैं। सबसे बड़ा सौभाग्य और क्या हो सकता था। तो मुझे भी कुछ लहू की बूंदें भारत मां के आंचल को साफ करने के लिए, बहाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और यही एहसास था कि जो हमें टास्क मिला है, उसे हर हाल में पूर्ण करना है।



परमवीर चक्र से सम्मानित *मेजर योगेंद्र सिंह यादव* पिछले दिनों राम लाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के मेहमान थे। इस दौरान हिंदी पत्रकारिता की विद्यार्थी *सिमरन सारवान* ने उनसे बातचीत की। उसी बातचीत को यहां 'कैम्पस कनेक्ट' के पाठकों के लिए दिया जा रहा है...

बातचीत की अंतिम कड़ी में आप नौजवानों को क्या कहना चाहेंगे और क्या राय नौजवानों को देंगे?

सबसे पहले मैं यह कहना चाहूंगा कि मुझे वह पंक्तियां याद आती हैं जो रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ने लिखी थीं–''दो में से क्या तुम्हें चाहिए कलम या कि तलवार/ मन में ऊंचे भाव कि तन में शक्ति विजय अपार।'' हमें अपने मन और तन से शक्ति के रूप में चलना है और कलम से इतिहास लिखे जाते हैं। तलवारों से इतिहास रचे जाते हैं। अपनी तलवार से इतिहास को रचना है या कलम से इतिहास को लिखना है। आपके ऊपर निर्भर करता है। पॉजिटिव एनर्जी में रहो। पॉजिटिव औरा में रहो। यह हमारी आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाती है। पॉजिटिव और आध्यात्मिक शक्ति आत्म बल पैदा करती है। आत्म बल से आत्मविश्वास पैदा होता है। जो अत्मविश्वास से भरा होता है। वह हर कार्य को आसानी से पूर्ण कर सकता है। देश के युवाओं से यही अनुरोध करता हूं कि हर कार्य को युवा आसानी से पूर्ण कर सकता है तो देश के युवाओं से मेरा यही अनुरोध है कि आप अपने विचारों में हमेशा सकारात्मक भाव रखिए और जीवन को सकारात्मक भाव से जियो, क्योंकि यह जीवन तुच्छ नहीं, अनमोल है। यह हमारे माता–पिता का दिया हुआ है। इस भारत मां का दिया हुआ है। इस भारत मां के कर्तव्य के ऊपर इस भारत मां के मष्तिक को ऊंचा करने के लिए जीवन कुर्बान होना चाहिए। समस्याएं आएंगी जीवन में। हमें उनसे लड़ना होगा और जो समस्याओं से लड़ता है वही तो वीर कहलाता है। जीवन सरल रेखा के समान नहीं है। जीवन ऊंचाइयों और निचाइयों से भरा पड़ा है। जो लड़ेगा वही जिंदा रहेगा।

सर, आपने रेडियो तरंग के लिए समय निकाला। देश, सेना और युवाओं के संबंध में इतनी महत्वपूर्ण बातें हमारे श्रोताओं के लिए की, इसके लिए आपका बहुत–बहुत धन्यवाद।

आपको भी धन्यवाद। आपने तैयारी और विस्तार के साथ इतने सवाल किए। इतनी बड़ी संख्या में युवाओं और समाज से जुड़ने और उनके बीच अपनी बात रखने का अवसर दिया। इसके लिए हम रेडियो तरंग के आभारी हैं। आपकी पूरी टीम के आभारी हैं। नमस्कार।

आज के समय में कॉर्पोरेट क्षेत्र में नैतिकता आवश्यक



पाथवे की प्लेसमेंट सेल ने रोजगार के रास्ते खोले

खुशी वशिष्ठ

नई दिल्ली। कॉर्पोरेट सेक्टर में काम करते वक्त किन जरूरी बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए, किन माध्यमों का इस्तेमाल करके सफलता प्राप्त की जा सकती है और कैसे काम के बीच उत्पन्न होने वाली बाधाओं का सामना किया जाता है। ऐसे अनेक बिन्दुओं को लेकर राम लाल आनंद महाविद्यालय के प्लेसमेंट सेल ने 16 फरवरी को वक्ता सत्र का आयोजन किया।

एम्फी थिएटर में आयोजित किए गए सत्र में प्रमुख वक्ता के तौर पर सीनियर कॉर्पोरेट ट्रेनर डॉ. मोनिका खतवानी मौजूद रहीं। वह एक परामर्श मनोवैज्ञानिक भी हैं। लगभग दो घंटे चले सत्र में महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। डॉ. मोनिका खतवानी ने नैतिक व्यवहार के विभिन्न आयामों का जिक्र किया।

यह भी बताया कि इनका कॉर्पोरेट क्षेत्र में किस प्रकार पालन किया जाना चाहिए। रतन टाटा और एपीजे अब्दुल कलाम जैसे उदाहरण देते हुए नैतिक नेतृत्व के महत्व पर जोर दिया। साथ ही निष्पक्षता, गुणवत्ता, सहयोग और ईमानदारी जैसे सफलता के स्तंभों पर प्रकाश डाला। डॉ. मोनिका खतवानी की ओर से समझाए गए बिंदुओं में नैतिक मानकों का मूल्यांकन, व्यावसायिक निर्णय लेने में व्यावहारिक अनुप्रयोग और हितों के टकराव एवं रिश्वतखोरी जैसी चुनौतियों का समाधान करना शामिल था। उन्होंने नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर दिया। स्पष्टता, सहानुभूति और व्यावसायिकता पर ध्यान केंद्रित करते हुए संचार बाधाओं, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और प्रस्तुति कौशल जैसे मुख्य बिंदुओं के बारे में भी बताया। इससे पहले मुख्य वक्ता का स्वागत प्लेसमेंट सेल की संयोजिका प्रो. नीना मित्तल ने किया।

इस मौके पर शिक्षक सिद्धार्थ गुप्ता, सृजना सिंह, रियंका जैन सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे। कॉर्पोरेट सेक्टर कितनी सजगता से काम करता है, इस पर उदाहरण देकर विशेषज्ञों ने समझाया। साथ ही कैसे कॉर्पोरेट सेक्टर में रणनीति बनाई जाती है और कैसे स्वयं को निखारा जाता है। एक्सपर्ट ने बारीकी से बताया।

चुनौतियां तो हर छोटे से छोटे काम में हैं, लेकिन चुनौतियों से जो कोई जूझता है आगे वही बढ़ पाता हैं। नैतिकता कैसे सहयोगी है, हमारे काम में, हमारे पूरे जीवन में उसका महत्व विद्यार्थियों को जानना जरूरी है। अंत में विद्यार्थियों ने प्रश्न कर आयोजन का समापन किया ।

भारत की संस्कृति प्राचीन और गौरवशाली

श्वेता सिंह

नई दिल्ली। भारत की सभ्यता और संस्कृति अत्यन्त प्राचीन और गौरवशाली है। आज के युवाओं को भारत का इतिहास पढ़ने की जरूरत है। युवाओं को भारत की सभ्यता के बारे में सही जानकारी प्राप्त होनी चाहिए। उन्हें वर्तमान और भविष्य का विचार करना चाहिए। यह बात संस्कृति और विदेश राज्यमंत्री मीनाक्षी लेखी ने 23 फरवरी को राम लाल आनंद महाविद्यालय में विकसित भारत विषयक व्याख्यान देते हुए कही। यह आयोजन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, दोहरी फाउंडेशन की साझेदारी के साथ किया गया।

मीनाक्षी लेखी ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा कि भारत सभ्यता की जननी है। हम उन महान पूर्वजों की महान संतान हैं जो अपने देश को बदलने की ताकत रखते हैं। हमें अपने देश को हीन नहीं समझना चाहिए। कितने ही देशों की सभ्यता समय–समय पर आई, विकसित हुई और नष्ट भी हो गई, पर भारत की सभ्यता, संस्कृति अत्यंत प्राचीन और गौरवशाली है। भारत के लोग अतिथि देवो भव और वसुधैव कुटुंबकम का भाव रखते हैं। इसी भाव को अपने मन में रखकर कोरोना के समय हमारे देश ने न जाने कितने ही देशों को मुफ्त वैक्सीन मुहैया कराई। हमें गर्व होना चाहिए कि हम भारतीय हैं। उन्होंने कहा कि विश्व में हमारी विरासत और संस्कृत का अत्यंत सम्मान है। भारत की संस्कृति को समझने के लिए एक जीवन कम है। देश के युवाओं को अपनी संस्कृति को इसी प्रकार आगे बढ़ाते रहना चाहिए।

आज के समय में लोग विज्ञान की बात करते हैं, वेदों का हिस्सा ही विज्ञान है। अपने वक्तव्य में गीता के श्लोक सम्मिलित करते हुए उन्होंने कहा कि गीता सिखाती है, आपके पास जो भी है वह समर्थ है। वह सिर्फ आपके लिए नहीं आपकी जिंदगी पर सिर्फ आपका हक नहीं अन्य लोगों का भी है। भारत के लोग और उनकी संस्कृति की पहचान रही है लोगों को साथ लेकर चलना, सहायता करना और भला करना। जो सभ्यता और संस्कृति हमारे पूर्वजों ने देकर इसकी नींव रखी। उस पर इमारत बनाने का काम हमारा है। आने वाली पीढ़ी को अपनी सभ्यता से अवगत कराना और विकसित भारत के लक्ष्य को पूरा करना।

उन्होंने एम्फीथिएटर में मौजूद लोगों को शपथ दिलाते हुए कहा कि हम शपथ लेते हैं कि 2047 तक विकसित भारत बनाने का पूरा प्रयास करेंगे और भारत की एकता, अखंडता और संस्कृति को इस प्रकार गौरवशाली बनाए रखेंगे। प्रो. रमेश गौड़ बोले कि बिना संस्कृति और सभ्यता के भारत का सतत विकास नहीं हो सकता। भारत की सभ्यता और इसका इतिहास बहुत गौरवशाली है। इस मौके पर इंदिरा गांधी केंद्र के सच्चिदानंद जोशी और राम लाल आनंद महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता सहित बड़ी संख्या में शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे। हिंदी विभाग की अध्यक्ष प्रो. अर्चना गौड़ ने शुरुआत में कार्यक्रम की भूमिका रखते हुए उसका सफल संचालन किया तो स्वागत की जिम्मेदारी का निर्वहन प्राचार्य ने किया।



विदेश राज्यमंत्री मीनाक्षी लेखी ने विकसित भारत पर व्याख्यान दिया

हाशिए के समाज की दी जानकारी

नई दिल्ली। मुल्क राज आनंद अपनी किताब अनटचेबल के लिए विख्यात हैं। यूबीक्विटस सोसाइटी ने मुल्क राज आनंद से जाति और समसामयिक वास्तविकताएं विषय पर व्याख्यान कराया। प्रो. राज कुमार इस सभा के मुख्य वक्ता थे। उन्होंने अपने व्यक्तव में अनुसूचित जाति के संघर्ष के बारे में बात की।

साथ ही वर्तमान में अनुसूचित जाति–जनजाति के हालातों के बारे में बताया। उन्होंने विद्यार्थियों को जातियों पर लिखी गई बहुत सी किताबों के बारे में बताया। इस मौके पर समिति के संयोजक डॉ. नरेन्द्र कुमार मौजूद थे। सभा के अंत में डॉ. नरेन्द्र कुमार ने प्रो. राज कुमार को विद्यार्थियों के बीच महत्वपूर्ण जानकारी साझा की।

युवाओं ने जाना जीवन में मोटे अनाज का महत्व

खेती को किस तरह नुकसान पहुंचा, यह भी बताया

उत्कर्ष

नई दिल्ली। एक कहावत है चींटी को कण और हाथी को मन, अर्थात जीव चाहे छोटा हो या विशालकाय, भोजन सभी के लिए आवश्यक है। एक आदिमानव हो या अंतरिक्ष में जाने वाला मनुष्य भोजन सभी की मूलभूत जरूरत है। यह बात राम लाल आनंद महाविद्यालय के सेमिनार कक्ष में प्रो. संजय कुमार शर्मा ने कही। फीडिंग द 10 बिलियन बाई 2050 : ए जिनोमिक्स पर्सपेक्टिव शीर्षक से महाविद्यालय की संगोष्ठी समिति ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर विकसित भारत अभियान के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. मनोज प्रसाद मौजूद रहे। डिजिटल प्रस्तुति के माध्यम से बाजरे की खेती को प्रोत्साहित किया।

प्रो. मनोज प्रसाद ने बताया कि किस तरह हरित क्रांति के दौरान मोटे अनाज की खेती को समाप्त किया गया, जो आज सैकड़ों बीमारी का कारण बना है। आयोजन का उद्देश्य युवाओं में मोटे अनाज की उपयोगिता को बताना और कृषि को प्रोत्साहित करना था। महाविद्यालय के उपप्राचार्य प्रो. सुभाष चन्द्र डबास सहित बड़े पैमाने पर शिक्षक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

हिंदी को वैश्विक भाषा बनाने का प्रयास



संजीव राज

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय में हिंदी हस्ताक्षर अभियान ने हिंदी भाषा के बढ़ावे का प्रयास किया। राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने इस अभियान के तहत हिंदी को महत्व देने का संकल्प लिया। यह अभियान छात्रों को हिंदी लेखन, पठन पाठन और बोलने के प्रोत्साहन के लिए चलाया गया। इसके माध्यम से हमारी संस्कृति और भाषा को बचाने और सुरक्षित रखने का संदेश दिया गया।

इस अभियान में शिक्षकों और विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। सभी ने अपने हस्ताक्षर हिंदी में करते हुए अभियान में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। हिंदी विभाग के डॉ. रोशनलाल मीणा ने बताया कि हिंदी भाषा को विश्व स्तर पर लाने के लिए हम सभी को मेहनत करनी है। हम सभी को अपनी भाषा के प्रति गर्व महसूस करना चाहिए। हिंदी विभाग की अध्यक्ष प्रो. अर्चना गौड़ ने इस अभियान में जुड़ने और सहयोग के लिए आभार प्रकट किया। हिन्दी हमारी सांस्कृतिक भाषा है इसको बचाना, इसका संरक्षण करना हमारी प्रथम औपचारिकता है। हमें गर्व के साथ अपनी भाषा को बोलना चाहिए। इस बात में कोई संशय नहीं कि हम अपनी सांस्कृतिक भाषा को छोड़कर पाश्चात्य भाषाओं की ओर अपना रुख बना रहे हैं। यह चिंतनीय है। इसलिए आज हम सपथ लेते हैं कि हम हिन्दी का संरक्षण करेंगे। साथ ही उसे आगे भी बढ़ाएंगे।

समस्या का रूप ले चुकी है प्लास्टिक

उत्कर्ष

नई दिल्ली। वसुधा द इको क्लब ने 14 फरवरी को अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें राम लाल आनंद महाविद्यालय के सभी विभागों के विद्यार्थी मौजूद रहे। संचालक यश और चहक ने कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए कहा कि हमारा उद्देश्य न सिर्फ पौधे लगाना है बल्कि पर्यावरण के प्रति दुर्व्यवहार को समाप्त करना है। समिति के पदाधिकारियों ने प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों को समिति के कार्यों एवं अन्य गतिविधियों से अवगत कराया। साथ ही जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

समिति से जुड़े शिक्षक डॉ. वीरेंद्र बहादुर सिंह ने पर्यावरण की समस्याओं को केंद्र में रखते हुए कहा कि आज हम प्लास्टिक का इतना उपयोग कर रहे हैं कि दिल्ली के डंप एरिया में कूड़ों के पहाड़ बन चुके हैं। यह आने वाले दिनों के लिए एक विकट समस्या है। अंत में समिति अध्यक्ष हर्ष किशोर ने गांधीजी के विचार को रखते हुए कहा कि आप जैसी दुनिया को देखना चाहते हैं वैसी बनाने का भी प्रयास आपको करना चाहिए।



राजस्थान के जैसलमेर के पास गांव में लगे सात दिवसीय कैंप के दौरान विद्यार्थियों ने छोटी कक्षाओं के विद्यार्थियों को शिक्षित भी किया।

एनएसएस ने गांव के जीवन को करीब से देखा

कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इकाई ने जैसलमेर शहर में सात दिनों के विशेष कैम्प का आयोजन किया। 2 फरवरी से 9 फरवरी तक लगे इस स्पेशल कैंप की रूपरेखा दिल्ली विश्वविद्यालय के एनएसएस योजना समन्वयक नरेंद्र बिश्नोई ने तय की और आयोजन राम लाल आनंद महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता के मार्गदर्शन में हुआ। साथ ही सीमा जनकल्याण समिति के महामंत्री वासुदेव जी का सहयोग प्राप्त हुआ।

कैंप में महाविद्यालय की एनएसएस इकाई के 40 स्वयंसेवकों ने हिस्सा लिया। शिविर के विद्यार्थियों ने सोनू और रणऊ के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के साथ संवाद किया। इस दौरान विद्यार्थियों ने कक्षा 9 वी से 12वीं तक के विद्यार्थियों को विभिन्न शैक्षणिक और कैरियर संबंधित परामर्श दिए। तनोट गांव में सिलाई सेंटर में काम कर रही महिलाओं से बातचीत की और उन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं से अवगत कराया। इस साप्ताहिक शिविर में विद्यार्थियों ने लोंगेवाला युद्ध स्मारक, कुलधारा गांव, तनोट राय मंदिर और भारत–पाकिस्तान सीमा का भी भ्रमण किया।

एनएसएस के विद्यार्थियों ने सम सैंडयून, दामोदरा के पोखर, गड़ीसर झील और हनुमान चौराहे पर सफाई अभियान चलाया तथा अमरसागर इलाके में 160 परिवारों का सर्वेक्षण कर उनकी समस्याओं पर रिपोर्ट तैयार की। दिल्ली विश्वविद्यालय से आएं विद्यार्थियों ने सीमाजन कल्याण छात्रावास के सीमांत क्षेत्र से ताल्लुक रखने वाले विद्यार्थियों के साथ एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया, जहां भारत की विभिन्न परंपराओं एवं संस्कृतियों की अदभुत झलकियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के उपरांत विद्यार्थियों ने बीएसएफ कैंप में जवानों से भेंट की और उनके कार्य प्रणाली से अवगत हुए। यूनिट कमांडिंग ऑफिसर ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उन्हें मानसिक व शारीरिक रूप से मजबूत बनने को प्रेरित किया। विशेष शिविर में स्वयं सेवकों ने दिव्यांग विद्यार्थियों के साथ समय बिताया और पाकिस्तान से आए शरणार्थियों से बातचीत की। स्वयं सेवकों के साथ कैंप में महाविद्यालय के एनएसएस इकाई के प्रोग्राम ऑफीसर डॉ. अनुराग शर्मा, डॉ. कुलदीप सिंह , डॉ. प्रतिमा नेगी और डॉ. रीना कसाना मौजूद रहे।

तरंग तरक्की करेगा तो आप भी तरक्की करेंगे

आरएलए के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम ने मनाई पहली वर्षगांठ

कैम्पस संवाददाता



रेडियो तरंग के समारोह में बीबीसी के मशहूर पत्रकार रेहान फजल और डॉ. रितु राजपूत ने हिस्सा लिया।

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम में गई तो जिंदगी के 40 वर्ष पीछे चली गई, जब मैंने रेडियो में प्रवेश किया था। हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार के तहत संचालित रेडियो तरंग के समारोह में ऑल इंडिया रेडियो में प्रोग्रामिंग हेड रहीं डॉ. रितु राजपूत ने भाषा कैसी हो के सवाल पर कहा कि मानक सम्मत भाषा बरकरार रखनी है। अच्छा पढ़िए। आंकिए। तोलिए। अगर नहीं पता है तो जानने का प्रयास करिए। एयर पर जाने से पहले क्रास चेक करिए। इतना सब कर लेंगे तो तरंग की तरक्की कौन रोक पाएगा। बीबीसी हिंदी के रेहान फजल ने कहा कि आज पत्रकारिता दो भागों में बंटी है, लेकिन यह सही पत्रकारिता नहीं है। आपको इस तरफ का भी लेना है। उस तरफ का भी लेना है। तभी आप सही पत्रकारिता कर पाएंगे।

इससे पहले महाविद्यालय प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने अतिथियों और विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि मन में सवाल आया कि क्या हमारे विद्यार्थी सभी संचार माध्यमों के लिए तैयार हैं, इसी सवाल ने रेडियो स्टेशन की स्थापना की। रेडियो तरंग के निदेशक प्रो. राकेश कुमार ने रेडियो की स्थापना का विचार आने से लेकर अब तक की पूरी यात्रा पर प्रकाश डाला। संचालन की जिम्मेदारी शृंगारिका, सिमरन, शिवांश और खुशी ने संभाली।

समारोह में सबसे अधिक योगदान देने वाले पांच विद्यार्थियों को नगद राशि और प्रमाण पत्र देकर पुरस्कृत करने के साथ कई उन विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया, जो पिछले साल पास होकर निकले। इसमें दीपशिखा, समीरा, इमरान, रोहित, रवि, आकांक्षा, प्रीति, काजल, शिवानी आदि शामिल थे। विशेष सम्मान रेडियो तरंग की जिंगल बनाने वाले कमल प्रजापति को दिया गया। धन्यवाद की जिम्मेदारी हिंदी विभाग की अध्यक्ष प्रो. अर्चना गौड़ ने निभाई, उन्होंने पूरी टीम की प्रशंसा करते हुए कहा कि आप सब इसी तरह काम करते रहे। समारोह में उपप्राचार्य प्रो. सुभाष चन्द्र डबास, प्रो. श्रुति आनंद, डॉ. एनी रे, डॉ. रीना, डॉ. सुनयना, डॉ. रोशनलाल मीणा सहित विभाग के शिक्षक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

आयाम नाटक प्रतियोगिता में हसरतें ने बाजी मारी

संजीव राज

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय के बच्चों ने आईआईटी जोधपुर में अपनी काबिलियत का लोहा मनवाया। महाविद्यालय की ड्रामा समिति हसरतें ने आयाम नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हासिल किया।

आईआईटी जोधपुर ने 17 फरवरी को नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता का आयोजन करवाया था, जिसमें भारत के अनेक महाविद्यालयों की ड्रामा समितियों ने भाग लिया। इसमें महाविद्यालय की हसरतें समिति ने असुरक्षा थीम पर आधारिते मैं ही हूं नाटक प्रस्तुत किया। राघव शर्मा, लक्ष्या पुंडीर, लक्ष्य राठी, कृष्णा, स्नेहा, मयुख गौतम और सिमरन अरोरा ने मिलकर इस नाटक का लेखन किया था। इसी के साथ उनकी टीम ने प्रस्तुति दी। इसमें एक इंसान को असुरक्षा दिखाने के लिए पौराणिक कथाओं का उपयोग किया गया। इस नाटक का नेतृत्व समिति की अध्यक्षा सिमरन अरोरा ने किया। महाविद्यालय ने इस उपलब्धि के लिए हसरतें की पूरी टीम को बधाई दी है। समिति संयोजक डॉ. प्रभाष पाण्डे ने भी सभी सदस्यों को बधाई दी।



हसरतें ने असुरक्षा थीम पर आधारित मैं ही हूं नाटक प्रस्तुत किया।



आरएलए के ज्योलॉजी विभाग के शिक्षक प्रो. प्रभाष कुमार पांडे को रिटायर होने पर सम्मानित किया गया।

पृथ्वी पर हो तो पृथ्वी को जानो

दीपक कुमार

नई दिल्ली। छात्रा नंदिनी और छवि ने रोचक अंदाज में वशांख आयोजन का शुभारंभ किया। इसी क्रम में ज्योलॉजी विभाग से जुड़ी एक डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई। राम लाल आनंद महाविद्यालय के एम्फी थिएटर में हुए इस आयोजन में विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। महाविद्यालय के उपप्राचार्य प्रो. सुभाष चन्द्र डबास ने विशेषज्ञों को जीवंत पौधा देकर उनका स्वागत किया।

विभाग के शिक्षक प्रो. प्रभाष कुमार पांडे ने अतिथियों का परिचय कराया। पूरा आयोजन 6 चरणों में आयोजित किया गया। पहले तीन चरणों में विशेषज्ञ प्रो. डी.एम. बनर्जी, प्रो. पंकज श्रीवास्तव, प्रो. पी.पी. चक्रवर्ती के सत्र हुए, जिसमें भू– विज्ञान और एथिक्स ऑफ जिओ साइंस के बारे में जानने को मिला। तीनों सत्र पीपीटी के माध्यम से पूर्ण हुए। विशेषज्ञों ने इन सत्रों में विस्तार के साथ बात की। विशेषज्ञों के सत्र खत्म होने के बाद रिटायर हो रहे विभाग के शिक्षक प्रो. प्रभाष कुमार पांडे को सभी विशेषज्ञों ने सम्मानित किया। विशेषज्ञों ने प्रोफेसर पांडे को उपहार देकर अपने अपने विचार साझा किए।

वशांख का आयोजन राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के उपलक्ष्य में ज्योलॉजी विभाग की ओर से किया गया था। सत्र खत्म होने के बाद परिसर में एग्जीबिशन, गेम और विचार विमर्श का कार्यक्रम रखा गया था। इन सभी गतिविधियों में विभाग के शिक्षकों सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने शिरकत की।

पुराने विद्यार्थियों ने साझा किए अनुभव

नई दिल्ली। मार्ग प्रबंधन समिति ने 17 फरवरी को एक एलुमनाइ मीट का आयोजन किया। इसमें शामिल हुए विद्यार्थियों ने महाविद्यालय से निकलने के बाद के अपने अनुभव को साझा किया, जिससे एक यादगार दिन बन गया। महाविद्यालय की पूर्व छात्रा सिद्धि कपूर और पूजित श्रीवास्तव ने अपने अनुभव साझा करते हुए अपनी व्यावसायिक उपलब्धियां और कॉलेज शिक्षा का उनके ऊपर पड़े प्रभाव पर प्रकाश डाला। इसके बाद एक इंटरएक्टिव सत्र हुआ। इसमें बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने अपने सीनियर से सवाल किए जिसका उन लोगों ने बेहतर ढंग से जवाब दिया। समिति की संयोजक रियंका जैन और सह–संयोजक सृजना सिंह के साथ कार्यक्रम के समापन पर पूर्व विद्यार्थियों को प्रशंसा पत्र प्रदान किया। अंत में समिति के अध्यक्ष प्रियांशी चिमनानी ने इस मीट में जुड़ने के लिए सभी लोगों का आभार व्यक्त किया और भविष्य में ऐसे और आयोजन करने की बात कही।

विकसित भारत में विज्ञान की भूमिका अहम : प्रो. राजीव

खुशी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री बनते ही 2014 में नरेंद्र मोदी ने कहा कि वह भारत को आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं। आत्मनिर्भर का मतलब एक ऐसा देश, जो किसी भी अन्य देश पर निर्भर न हो। जो हर काम खुद से करे और देशी वस्तुओं को बढ़ावा दे। इन्हीं शब्दों के साथ प्रो. राजीव कॉल ने अपने वक्तव्य की शुरुआत की। यह वक्तव्य उन्होंने राम लाल आनंद महाविद्यालय में 27 फरवरी 2024 को दिया, जो राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के उपलक्ष्य में रखा गया था।

मुख्य अतिथि के वक्तव्य के बाद डॉ. नील सरोवर भागेश ने एक क्विज के जरिए भारतीय वैज्ञानिकों के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी दी। प्रो. चंद्र कुमार सिंह ने इंडियन स्पेस साइंस के बारे में विद्यार्थियों की जिज्ञासा दूर की। यह कार्यशाला राम लाल आनंद कॉलेज के माइक्रोबायोलॉजी विभाग ने आयोजित की, जिसमें विद्यार्थियों ने विज्ञान का ज्ञान अर्जित किया और अंतरिक्ष के बारे में नई चीजें जानीं। समारोह में मौजूद विद्यार्थियों ने एक के बाद एक कई प्रश्न विशेषज्ञों से किए, जिसके जवाब उन्होंने दिए। इसके बाद कार्यक्रम का समापन किया गया।

संचार कौशल बढ़ाने के लिए कराई गई चर्चा

योगेश

नई दिल्ली। भारत का महत्व उसकी विविधता और संस्कृति के लिए है। यह बात 22 फरवरी 2024 को राम लाल आनंद महाविद्यालय में अभ्यास सामूहिक चर्चा में कही गई। इसका अयोजन महाविद्यालय की पाथवे समिति की ओर से किया गया।

व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए प्लेसमेंट सेल ने मॉक ग्रुप डिस्कशन करवाया। यह सामूहिक चर्चा कई समूहों में प्रायोजित हुई, जिसके विषय थे–नैतिक नेतृत्व, भारत क्यों मायने रखता है?, कृत्रिम बुद्धि मानव जाति के लिए सबसे बड़ा खतरा है।

विषय को दो मिनट पहले प्रतिभागियों के मध्य रखा गया। सामूहिक चर्चा के लिए 10 मिनट का समय और निष्कर्ष के लिए एक मिनट का समय निर्धारित किया गया। इसमें करीब 27 प्रतिभागियों ने भाग लिया और अपने संचार कौशल और विचारों को व्यक्त किया। चर्चा में प्रतिभागियों को अपनी सहूलियत के हिसाब से भाषा का चयन करने की अनुमति थी। चर्चा में प्रतिभागियों ने करियर को बढ़ावा देने में एक मजबूत पेशेवर नेटवर्क के प्रभाव पर जोर दिया।

ज्ञानवर्धक चर्चा और सत्र के बाद निर्णायक मंडली ने विद्यार्थियों को इस बारे में समीक्षात्मक मूल्यांकन दिया, जिसमें निर्णायक मंडली ने प्रतिभागियों को कई तरह के सुझाव दिए। सबसे पहले प्रभावी संचार कौशल, स्पष्ट और संक्षिप्त संचार के साथ ही साथ व्याकरणिक गलतियों का ध्यान रखना, पर्यायवाची शब्दों के कम प्रयोग को एक महत्वपूर्ण पहलू के रूप में उजागर किया। शांतिपूर्ण सामूहिक चर्चा विद्यार्थी जीवन के लिए एक अच्छी पहल है, इससे विद्यार्थियों का मानसिक विकास होता। उन्हें एक के बाद एक चीजें सीखने को मिलती हैं। इन चीजों का उन्हें कॅरिअर में लाभ मिलता है। ऐसा करने से विद्यार्थी तार्किक और मानसिक रूप से मजबूत होते हैं। इस कार्यशाला में विद्यार्थियों को जोड़ने के लिए विभिन्न विषयों पर बात की जाती रही।

आम जनता के पक्ष में ज्यादा रहता है बीबीसी

शाम्भवी



नई दिल्ली। कोई भी निष्पक्ष नहीं हो सकता। अगर कोई कहता है कि मैं निष्पक्ष हूं तो वह जनता को बेवकूफ बना रहा है और खुद की ब्रॉडिंग कर रहा है। जब भी हम किसी खबर को छापते हैं तो हम किसी न किसी के पक्ष में जरूर होते हैं और जहां तक बात रही बीबीसी न्यूज चैनल की तो बाकी न्यूज चैनलों और हममें बस फर्क इतना सा है कि हमारा न्यूज चैनल जनता के पक्ष में ज्यादा है। ऐसा कहना है बीबीसी के समाचार संपादक कुशाल लाली का। कुशाल लाली ने राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार के विद्यार्थियों से बात करते हुए यह बात कही। राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों को बीबीसी न्यूज चैनल का दौरा कराया गया। इस दौरान विभाग के शिक्षक डॉ. प्रदीप कुमार मौजूद थे। विद्यार्थियों को बीबीसी न्यूज चैनल के ढांचा और काम करने के तरीकों के बारे में जानने का अवसर मिला। इसलिए सबसे पहले विद्यार्थियों को चैनल की अलग–अलग भाषाओं की टीम से मिलवाया गया और उनके काम करने के तौर तरीकों के बारे में बताया गया। फिर विद्यार्थियों को न्यूज चैनल में उपयोग में आने वाली तकनीकों से रूबरू करवाया गया।

तत्पश्चात समाचार संपादक कुशाल लाली के साथ बैठकर बच्चों ने बात की। बच्चों के सवालों का जवाब देते हुए कुशाल लाली ने बीबीसी न्यूज चैनल के काम करने के तरीकों के बारे में बताया और कामर्शियल मीडिया किस प्रकार काम करता है। उन्होंने यह भी बताया कि बीबीसी न्यूज चैनल किस प्रकार कामर्शियल मीडिया से अलग है। इसके अतिरिक्त उन्होंने विद्यार्थियों को नौकरियों की संभावनाओं के बारे में बताया।

संरक्षक मंडल

प्राचार्य

प्रो. राकेश कुमार गुप्ता

विभागाध्यक्ष

प्रो. राकेश कुमार

परामर्शदाता

डॉ. अटल तिवारी

संपादक

पुष्पेन्द्र अहिरवार

संपादकीय सहयोग

संजीव राज